

राजस्थान सरकार
वित्त (राजस्व) विभाग

क्रमांक: प.2(21)वित्त/राजस्व/90

दिनांक:- - 8 MAR 2017

परिपत्र

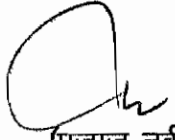
इस विभाग के पूर्व समसंख्यक परिपत्र दिनांक 28.05.2010 एवं दिनांक 26.10.2010 द्वारा जारी निर्देशों के अतिक्रमण में राजस्थान अधीनस्थ लेखा सेवा के अधिकारियों/कर्मचारियों के स्थानान्तरण के संबंध में निम्न दिशा निर्देश तुरन्त प्रभाव से जारी किये जाते हैं:-

1. अधीनस्थ लेखा सेवा के कनिष्ठ लेखाकार, लेखाकार (नवीन पदनाम- सहायक लेखाधिकारी ग्रेड-11) एवं सहायक लेखाधिकारी (नवीन पदनाम- सहायक लेखाधिकारी ग्रेड-1) का स्थानान्तरण साधारणतया **चार वर्ष से पूर्व** नहीं किया जावेगा। विशिष्ट परिस्थितियों एवं राज्य हित में **चार वर्ष से पूर्व भी** राज्य सरकार की अनुमति से स्थानान्तरण किया जा सकेगा।
2. इन कार्मिकों को यथासंभव उनके **गृह जिले में ही पदस्थापित** किया जावेगा। यदि पद के अभाव में किसी अपरिहार्य स्थिति में गृह जिले में पदस्थापित किया जाना संभव नहीं हो तो ऐसे निकटवर्ती जिले में पदस्थापन किया जायेगा जहां उपयुक्त पद उपलब्ध हो।
3. गृह जिले/वैकल्पिक आवासीय जिले से बाहर कार्यरत लेखाकर्मियों की वरिष्ठता निदेशालय स्तर पर संधारित की जाएगी। गृह जिले/वैकल्पिक आवासीय जिले में पद रिक्त होने पर ऐसे इच्छुक कार्मिकों को उनके गृह जिले/वैकल्पिक आवासीय जिले से बाहर पदस्थापन अवधि की वरिष्ठता के आधार पर गृह जिले/वैकल्पिक आवासीय जिले में पदस्थापन हेतु पद की उपलब्धता होने पर नव पदोन्नत कार्मिकों से प्राथमिकता दी जायेगी। पदोन्नत कार्मिकों को गृह जिले/वैकल्पिक आवासीय जिले में पद रिक्त नहीं होने पर अन्य जिले में पदस्थापित किया जायेगा जहां उपयुक्त पद उपलब्ध हो।

वैकल्पिक आवासीय जिले का निर्धारण निदेशक, कोष एवं लेखा द्वारा कार्मिकों के आवेदन के आधार पर संबंधित जिले में आवेदक या आवेदक के पति/पत्नि के नाम मकान होने की स्थिति में केवल स्थानान्तरण प्रयोजनार्थ किया जायेगा। लेखाकर्मियों के स्थानान्तरण में गृह जिले के कार्मिक को वैकल्पिक गृह जिले के कार्मिक पर प्राथमिकता दी जायेगी।

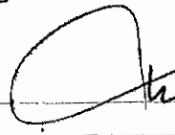
4. किसी भी कार्मिक को एक ही स्केल में दो से अधिक बार प्रतिनियुक्ति पर पदस्थापित नहीं किया जावेगा।
5. कार्मिक को **लगातार दो बार प्रतिनियुक्ति** पर राजकीय उपक्रमों एवं स्थानीय निकायों में तथा समान प्रकृति के कार्यालयों जैसे राजस्व अर्जित करने वाले विभाग अथवा निर्माण कार्य से संबंधित विभागों में पदस्थापित नहीं किया जावेगा। ऐसी दो नियुक्तियों के मध्य **न्यूनतम चार वर्ष** का अन्तराल होना अपेक्षित है।
6. राजकीय उपक्रमों/स्थानीय निकायों में **प्रतिनियुक्ति** अवधि अधिकतम **चार वर्ष** होगी तथा विभाग के प्रशासनिक सचिव की अनुशांषा पर अधिकतम एक वर्ष के लिए और बढ़ाई जा सकेगी।
7. **पति एवं पत्नि दोनों** के राजकीय सेवा में होने की स्थिति में दोनों कार्मिकों को यथासंभव **एक ही स्थान पर** पदस्थापित किये जाने का प्रयास किया जावेगा। इस हेतु संबंधित कार्मिक को लिखित रूप में वित्त वर्ष के प्रारम्भ होने के 30 दिवस में निदेशक, कोष एवं लेखा को आवेदन करना होगा जिसमें पति/पत्नि के कार्यालयाध्यक्ष द्वारा इस बारे में जारी प्रमाण पत्र संलग्न करना आवश्यक होगा।
8. **सेवानिवृत्ति में दो वर्ष** अथवा इससे कम अवधि शेष रहने पर आवेदन करने पर इच्छित जिले (विभाग/कार्यालय नहीं) में पद रिक्त होने पर पदस्थापन किया जा सकेगा।
9. **विधवा/परित्यक्तता/अविवाहित** महिला कर्मचारी को यथासंभव उसके **इच्छित शहर/करबे** में (विभाग/कार्यालय नहीं) पद रिक्त होने पर पदस्थापित किया जा सकेगा। इसके लिए संबंधित कार्मिक को अपना लिखित आवेदन निदेशक, कोष एवं लेखा को प्रस्तुत करना होगा।

10. अगर **कार्मिक स्वयं** अथवा उसकी पत्नी/पति अथवा आश्रित बच्चे **गंभीर बीमारी** यथा— कैंसर, एड्स, हृदय रोग, क्षय रोग, कुष्ठ रोग, हैपेटाईटिस—बी, थैलीसीमिया रोग, मनोरोग से पीड़ित है, तो सम्बंधित चिकित्सालय के अधीक्षक/मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी अथवा राजकीय आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य (Principal) के प्रमाण पत्र एवं अभिशंभा के आधार पर **इच्छित स्थान (विभाग/कार्यालय नहीं)** पर पदस्थापित किया जा सकेगा।
11. **शारीरिक रूप से निःशक्त कार्मिक** को उसकी **सुविधा अनुसार** पदस्थापित किया जावेगा। इस हेतु संबंधित कार्मिक को लिखित रूप में वित्त वर्ष के प्रारम्भ होने के 30 दिवस में निदेशक, कोष एवं लेखा को आवेदन करना होगा। यदि कर्मचारी निःशक्तजन कोटे में नियुक्त नहीं हुआ है तो उसे प्रार्थना पत्र के साथ **सक्षम अधिकारी/मेडिकल बोर्ड** द्वारा जारी निःशक्तता प्रमाण पत्र की प्रति संलग्न करनी होगी।
12. पारस्परिक स्थानान्तरण बिन्दु संख्या 1 में निहित अवधि से पूर्व भी किये जा सकेंगे परन्तु एक बार पारस्परिक स्थानान्तरण किये जाने पर ऐसे दोनों कार्मिकों का पुनः अन्यत्र स्थानान्तरण निर्धारित अवधि पूर्ण होने/नीति अन्तर्गत होने पर ही विचार किया जावेगा।
13. किसी कार्यालय में लेखाकर्मों के स्वीकृत पद की समाप्ति, क्रमोन्त/क्रमावनत होने पर कार्मिक के आदेशों की प्रतीक्षा में होने अथवा किसी सक्षम न्यायालय के न्यायिक आदेश की पालना में आदेशों की प्रतीक्षा में होने पर ऐसे कार्मिकों का पदस्थापन **वित्त (नियम) विभाग** के आदेश क्रमांक प.1(1)वित्त/नियम/2007 दिनांक 08.06.2016 में वर्णित प्रावधानों के अनुसार किया जायेगा।
14. **अनुशासनहीनता** अथवा **शिकायत** के कारण विभाग द्वारा रिलीव किये गये लेखाकर्मों के पदस्थापन हेतु प्रस्ताव राज्य सरकार को प्रस्तुत किये जायेंगे।
15. वांछित पद रिक्त होने पर स्थानान्तरण किया जा सकता है, यदि ऐसा किया जाना नीति के विपरीत न हो।
16. इस नीति के अन्तर्गत समायोजित न होने वाले **आवेदन एवं अनुशंभाओं** पर क्रियान्विति से पूर्व **माननीय मुख्यमंत्री महोदय का अनुमोदन** प्राप्त किया जावेगा।
17. ऐसे जिलों को **क्रिटिकल जिला** माना जावेगा जहां अधीनस्थ लेखा सेवा के स्वीकृत कुल पदों के 50 प्रतिशत या अधिक पद रिक्त है। उक्त जिलों से **जिले के बाहर स्थानान्तरण यथासम्भव** नहीं किये जावेंगे।
18. सेवानिवृत्ति में **तीन वर्ष या कम अवधि** शेष रहने पर ऐसे कार्मिकों को प्रतिनियुक्ति पर पदस्थापित नहीं किया जायेगा तथा प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत कार्मिकों को सेवानिवृत्ति से **छः माह पूर्व** प्रतिनियुक्ति से वापस राजकीय विभागों में रिक्त पदों पर पदस्थापन किया जायेगा।


 8/3/17
 (एजाज नबी खान)
 संयुक्त शासन सचिव

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है:—

1. प्रमुख सचिव, माननीय मुख्यमंत्री महोदय।
2. वरिष्ठ उप सचिव, मुख्य सचिव, राजस्थान, जयपुर।
3. निजी सचिव, प्रमुख शासन सचिव, वित्त
4. निजी सचिव, शासन सचिव, वित्त (राजस्व/बजट/व्यय)।
5. निदेशक, कोष एवं लेखा विभाग, जयपुर।
6. अतिरिक्त निदेशक, वित्त (कम्प्यूटर सैल) विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर।
7. रक्षित पत्रावली।


 8/3/17
 संयुक्त शासन सचिव